संपादकीय

भारी पड़ सकता है अभी युवाओं को टीका लगाना

अगर देश में कोरोना वैक्सीन की असीमित सप्लाई होती तो सभी बालिगों के लिए टीकाकरण अभियान शुरू किया जा सकता था। ऐसे में 18 साल से अधिक उम्र के सभी लोगों को वैक्सीन देना संभव होता, जिसकी कुछ लोग मांग भी कर रहे हैं। क्या ऐसा किया जाना चाहिए? असल में टीकाकरण का मकसद वैक्सीन की सीमित सप्लाई के बीच कोविड-19 के संक्रमण से होने वाली मौतों को कम करना है। इसका एक और उद्देश्य संक्रमण को कुछ इस तरह से नियंत्रित करना है कि लोगों को अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत न पड़े। अभी इसके बहुत कम साक्ष्य मिले हैं, जिनसे साबित हो सके कि संक्रमण रोकने में भी वैक्सीन कारगर है। आज कोरोना के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए जो लोग 18 साल से अधिक उम्र वालों के लिए वैक्सीन की वकालत कर रहे हैं, उनके लिए यह बड़ा मुद्दा हो सकता है। लेकिन यह न भूलें कि वैक्सीन की दोनों डोज लेने के बाद भी कई लोग कोरोना पॉजिटिव पाए गए। इनसे दूसरों में वायरस फैला और ये खुद भी संक्रमण के शिकार हुए। यह बात भी सच है कि टीका लगवाने के बाद हुआ संक्रमण गंभीर नहीं था। इसमें भी कोई शक नहीं है कि वैक्सीन से मृत्यु दर में कमी आती है। जिन्हें टीका लगा है, अगर उन्हें संक्रमण होता है तो अस्पताल में भर्ती होने की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन हम यह नहीं जानते कि क्या वैक्सीन से संक्रमण की आशंका भी कम होती है? ऐसे में वैज्ञानिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए टीकाकरण का लक्ष्य क्या होना चाहिए?

अभी देश में वैक्सीन का पर्याप्त स्टॉक नहीं है। इसलिए 18 से 45 साल के लोगों का टीकाकरण कई मायनों में जोखिम भरा होगा। पहली बात तो यह कि अगर हम इस आयु वर्ग के लोगों को वैक्सीन देना शुरू कर देंगे तो ऐसे समूह में संक्रमण के थोड़े-बहुत लक्षण भी दिखने बंद हो जाएंगे। इसके लिए वैक्सीन को कारगर भी माना गया है। लेकिन इस समूह में अभी भी संक्रमण के बेहद मामूली या न के बराबर ही लक्षण देखे जाते हैं। इसलिए युवाओं को अस्पताल में भर्ती नहीं होना पड़ता और न ही वायरस से इस समूह में अधिक जानें गई हैं। कोविड-19 से देश में जिन लोगों की मौत हुई है, उनमें से 88 फीसदी की उम्र 45 साल से अधिक थी। इसी वजह से बहुत सोच-समझकर उस आयु वर्ग को चुना गया, जिसे पहले वैक्सीन दी जा रही है। यों तो पिछले एक साल में आईसीयू बेड, बेड, वेंटिलेटर के मामले में हालात बेहतर हुए हैं, लेकिन ऐसे संसाधन असीमित नहीं हैं। इसलिए अभी 45 साल से अधिक आयु वर्ग के लोगों का टीकाकरण सही फैसला है। वैक्सीन लगने के बाद इस समूह के लोगों की ओर से स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव घटेगा और तब इन सुविधाओं का इस्तेमाल गंभीर रूप से बीमार लोगों के लिए किया जा सकेगा।

संक्रमण के गंभीर खतरे और मृत्यु दर को कम करने के लिए ब्रिटेन, जर्मनी और फ्रांस में भी इसी आधार पर तैयार प्राथमिक समूह को पहले टीका देने का निर्णय लिया गया। ऐसे ही कुछ अमीर देशों ने उम्र के आधार पर अपने नागरिकों के लिए जरूरत से अधिक वैक्सीन की मांग की। वहीं, कोरोना संक्रमण को लेकर अब तक जितने भी सीरो सर्वे हुए हैं, उनसे पता चलता है कि इससे हर आयु वर्ग के लोग प्रभावित हुए हैं। इनमें आठ साल लेकर 18 साल तक बच्चे भी शामिल हैं। कई जानकार कह रहे हैं कि सरकार को युवाओं को टीकाकरण के दायरे में लाना चाहिए। कोरोना की दूसरी लहर में युवा वर्ग सुपर स्प्रेडर साबित हो सकता है। बुजुर्गों की तुलना में युवा घर से बाहर अधिक समय बिताते हैं। इसलिए उसके संक्रमित होने की आशंका भी अधिक है। लेकिन जब तक यह पता नहीं चल जाता कि वैक्सीन लेने के बाद ट्रांसमिशन नहीं होता या इसका खतरा कम हो जाता है, तब तक यह वर्ग मास्क का प्रयोग करे, सामाजिक दूरी बनाए और समय-समय पर हाथ धोते रहे। इससे युवाओं में संक्रमण को कम करने में मदद मिलेगी।

-डॉ. एन.के. अरोड़ा

कोरोना के बीच लोगों को बड़ी राहत देंगी पांच आईटी कंपनियां, करने जा रहीं 1 लाख से ज्यादा भर्तियां

नईदिल्ली । कोरोना की दूसरी लहर से जॉब संकट दोबारा गहराने वाला है. इससे नौकरीपेशा लोगों की चिंता बढ़ गई है, लेकिन मुसीबत की इस घड़ी में देश की टॉप 5 कंपनियां उन्हें बड़ी राहत दे सकती हैं. दरअसल भारत की शीर्ष आईटी कंपनियां जल्द ही 1 लाख से ज्यादा भर्तियां करेंगी. इसमें आईटी सेक्टर के टैलेंटेड युवाओं को बेहतरीन मौका मिल सकता है.

माना जा रहा है कि ये इस साल की सबसे बड़ी भर्तियों में से एक होगी. इस बंपर हायरिंग से लाखों युवाओं को रोजगार मिलेगा. वैश्विक स्तर पर आईटी सेक्टर में अच्छे टैलेंट की बढ़ती मांग के चलते आईटी कंपनियां ये जॉब निकालेंगी.

रिपोर्ट्स के मुताबिक टीसीएस कैंपस से करीब 40000 भर्तियां करेगा. वहीं, इंफोसिस कैंपस से 25000 भर्तियां होने की संभावना है.

रिपोर्ट के मुताबिक विप्रो कंपनी भी पिछले से अधिक भर्तियां करेगी. हालांकि कंपनी की ओर से भर्तियों की संख्या के बारे में नहीं बताया गया है.

रिपोर्ट के मुताबिक टीसीएस, विप्रो, इंफोसिस, एचसीएल और टेक महिंद्रा इस साल 1,10,000 से अधिक भर्तियां

करेंगी, जो बीते साल की 90000 भर्तियों से अधिक है.

कोरोना महामारी के चलते देशभर में कामकाज का पूरा रूटीन ही बदल गया है. पिछले साल से ज्यादातर कंपिनयां लॉकडाउन के बीच वर्क फ्रॉम होम के कल्चर पर अधिक फोकस कर रही हैं. वक्त के साथ इसकी बढ़ती डिमांड को देखते हुए ज्यादातर कंपनियां और क्लाइंट अपने कारोबार को ऑनलाइन या डिजिटल प्लेटफॉर्म पर शिफ्ट कर रहे हैं.

एक्सपर्ट्स के मुताबिक इस वित्त वर्ष की शुरुआत के लिए नए सिरे से प्लान बनाया जा रहा है. इस बार हायरिंग बीते साल से 20 फीसदी अधिक होगी. इसके लिए भारत की शीर्ष पांच आउटसोर्सरों ने पिछले साल कुल 2.10 लाख भर्तियां की थी. इस बार ये आंकड़ा और ज्यादा होगा.

कोरोनाकाल में ग्रोथ बनाए रखने उद्योग और सरकार के बीच पूर्ण विश्वास की जरूरत : सीतारमण

कोलकाता । वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को कहा कि कोविड-19 महामारी के बीच वृद्धि को बनाए रखने के लिए उद्योग और सरकार के बीच पूर्ण विश्वास की जरूरत है। सीतारमण ने यहां मर्चेंट्स चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि केंद्र ने यह सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाए हैं कि महामारी की दूसरी लहर के बावजूद अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार जारी रहे। उन्होंने कहा, 'वृद्धि को बनाए रखने के लिए सरकार और उद्योग के बीच पारस्परिक पूर्ण विश्वास होना चाहिए। ऐसा कुछ नहीं होना चाहिए, जिससे अविश्वास पैदा हो।' वित्त मंत्री ने पश्चिम बंगाल के बारे में कहा कि राज्य में उद्योगों के विकास के लिए एक वैश्विक दृष्टिकोण के साथ 'ऑक्सीजन' की जरूरत है। उन्होंने कहा, 'राज्य के उद्योगों को फलने-फूलने के लिए बहुत अधिक ऑक्सीजन की जरूरत है। भारत का इतिहास बंगाल से लिखा गया था... लेकिन आज दार्जिलिंग चाय जैसा स्थापित उत्पाद भी मुश्किल दौर से गुजर रहा है। सीतारमण ने कहा, 'कोलकाता पहले उद्योगों के लिए जाना जाता था। उसे फिर ऐसा करना चाहिए।

बिना ई-वे बिल के जाने वाहनों की अब खैर नहीं, सिस्टम का दुरूपयोग कर रहे लोगों पर कसेगा शिकंजा

नईदिल्ली । सरकार बिना ई-वे बिल के जा रही वाहनों के मामले में जीएसटी अधिकारियों को वास्तविक समय पर रिपोर्ट उपलब्ध कराने की व्यवस्था करने जा रही है। इससे टोल प्लाजा पर ट्रकों को पकड़ने और जीएसटी (माल एवं सेवा कर) चोरी रोकने में मदद मिलेगी। इसके साथ कर अधिकारियों को उन ई-वे बिलों की विश्लेषण रिपोर्ट भी उपलब्ध कराई जाएगी जहां वस्तुओं की ढुलाई नहीं हो रही। इससे अधिकारियों को 'सर्कुलर ट्रेडिंग (इनपुट टैक्स क्रेडिट के उपयोग

के लिए फर्जी बिक्री सौदा दिखाने की धोखाधड़ी) के मामलों को पहचानने में मदद मिलेगी। माल एवं सेवा कर (जीएसटी) व्यवस्था के तहत अप्रैल 2018 से 50,000 रुपये से अधिक मूल्य की वस्तुओं को एक राज्य से दूसरे राज्य में भेजने के लिए ई-वे बिल अनिवार्य है। हालांकि सोने को इससे छूट दी गई है।

ई-वे बिल पर एक रिपोर्ट में सरकार ने कहा है कि मार्च 2021 तक की तीन साल की अवधि में 180 करोड़ ई-वे बिल क्रिएट किए गए हैं। इसमें से केवल 7 करोड़ बिलों का सत्यापन अधिकारियों ने किया है।' ई-वे बिल-तीन साल की यात्रा शीर्षक से जारी रिपोर्ट में कहा गया है जिन पांच राज्यों ने सर्वाधिक ई-वे बिल सृजित किए, वे गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाण, तमिलनाडु और कर्नाटक हैं। जिन पांच क्षेत्रों में पिछले तीन साल में अधिकतम संख्या में ई-वे बिल सृजित किए गये, वे कपड़ा, इलेक्ट्रिक मशीनरी, मशीनरी और यांत्रिक उपकरण, लोहा और इस्पात तथा वाहन हैं।इससे जब भी संबंधित वाहन आरएफआईडी टैग को पढ़ने वाले उपकरण से युक्त राजमार्गों से गुजरता है, पूरा ब्योरा सरकारी पोर्टल पर अपलोड हो जाता है। बाद में इस सूचना का उपयोग राजस्व अधिकारी जीएसटी पंजीकृत व्यक्ति द्वारा की गयी आपूर्ति के सत्यापन में करते हैं।

कोविड मरीजों के लिए ऑक्सीजन सप्लाई कर रहीं टाटा स्टील

नईदिल्ली । कोविड-19 मरीजों के इलाज के लिए विभिन्न राज्य सरकारों और अस्पतालों को दैनिक आधार पर 300 टन मेडिकल ऑक्सीजन सप्लाई करने का दावा टाटा स्टील ने की है। इस्पात मंत्रालय के अनुसार इस्पात कारखानों में 28 ऑक्सीजन संयंत्र हैं। ये संयंत्र सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में स्थित हैं जो प्रतिदिन 1,500 टन चिकित्सा ऑक्सीजन की सप्लाई कर रहे हैं। टाटा स्टील ने ट्विटर पर लिखा है, देश की जरूरत को ध्यान में रखते हुए, हम विभिन्न राज्य सरकारों और अस्पतालों को रोजाना 200-300 टन तरल चिकित्सा ऑक्सीजन की सप्लाई कर रहे हैं।

हम कोरोना की रोकथाम के लिए जारी अभियान में साथ हैं और निश्चित रूप से इससे पार पाएंगे।निजी क्षेत्र की जेएसपीएल ने भी कहा कि वह अपने अंगुल (ओड़िशा) और रायगढ़ (छत्तीसगढ़) स्थित कारखानों से 50 से 100 टन ऑक्सीजन की सप्लाई कर रही है। इससे पहले, सार्वजनिक क्षेत्र की सेल ने शनिवार को ट्विटर पर लिखा था, सेल ने अपने एकीकृत इस्पात कारखाने बोकारो (झारखंड), भिलाई (छत्तीसगढ़), राउरकेला (ओड़िशा), दुर्गापुर और बर्नपुर (पश्चिम बंगाल) से कोविड मरीजों के उपचार के लिए 99.7 प्रतिशत शुद्धता वाले 33,300 टन तरल चिकित्सा ऑक्सीजन की सप्लाई की है।

मुझे उम्मीद है कि लक्ष्मी घर आई में मेरा किरदार सामाजिक बदलाव लाएगा : अक्षित सुखिजा

जैसे हमारी संस्कृति के बारे में कुछ अच्छी बातें प्रचलित हैं उसी प्रकार इसमें कुछ सामाजिक बुराइयां भी हैं, जिसे सुधारने की बेहद जरूरत है। सौभाग्य से, अधिक से अधिक लोकप्रिय ब्रांड समाज के प्रति अपनी नैतिकता का एहसास करते हुए अपने नए- नए कॉन्टेंट में एक दूसरे से आगे निकल रहे हैं। इस समय में भारतीय टेलीविजन प्रेरणा लेने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है चाहे वह भावनात्मक हो, सामाजिक हो, अलौकिक हो या फिर संकट के समय में हो। टेलीविजन मनोरंजन का एक स्रोत है जो पूरे भारत में जनता को आकर्षित करता है।

यह समझते हुए स्टार भारत ने हाल के दिनों में ऐसे शोज लाए हैं, जो सामाजिक संदेश देते हैं जैसे बच्चियों की भ्रूण हत्या प्रति जागरूकता पैदा करना और अब चैनल अपने एक नए शो लक्ष्मी घर आई के जरिए समाज में दहेजप्रथा को लेकर फैली कुरीतियों को के खिलाफ लोगों में जागरूकता बढ़ाएगा।

इस शो में अनन्या खरे मुख्य विलन के रूप में नजर आएंगी, जिनका नाम है ज्वाला जो राघव (अभिनेता अक्षय सुखीजा द्वारा

अभिनीत किरदार) की माँ और मैथली (अभिनेत्री सिमरन द्वारा अभिनीत किरदार) की सास हैं। सभी कलाकारों ने आगे आकर एक इन्फ्लुएंसर के रूप में समाज को अपना एक अलग योगदान दिया है और अब इस क्लब में शामिल होने जा रहे हैं अक्षित सुखीजा।

यह बताते हुए कि कैसे उनका ऑन-स्क्रीन किरदार समाज पर एक सकारात्मक प्रभाव डाल रहा है, अक्षित सुखिजा कहते हैं, यह एक ऐसा शो है जो मुझे व्यक्तिगत रूप से सही के लिए खड़ा होने में मदद करता है। इस कहानी का उल्लेखनीय अर्थ है, जिसके चलते इस किरदार के लिए मैंने एक विशेष चुनौती का सामना किया। मेरे द्वारा निभाई गई पिछली शैलियों की तुलना में यह किरदार बहुत अधिक जटिल था जिसे मैंने इससे पहले कभी नहीं निभाया था।

माधुरी दीक्षित ने पिंक लहंगे में करवाया फोटोशूट

माधुरी दीक्षित खूबसूरत एक्ट्रेस में से एक है ये सोशल मिडिया पर काफी एक्टिव रहती है अपने फेन्स के साथ काफी फोटोज शेयर करती है माधुरी ने इन दिनों अपनी कुछ फटोज़ पोस्ट की जिसमे वे काफी खूबसूरत नजर आ रही है इन फोटोज में वे पिंक कलर का लहंगा पहनी हुई नजर आ रही है

माधुरी अपनी इन फोटोज में हल्के और डार्क पिंक कलर में जरी लहंगा पहने हुई नजर आ रही है इसके साथ डार्क पिंक लिपस्टिक,ड्राप डायमंड झुमके और एक नेकपीस के साथ अपना खूबसूरत लुक देती हुई दिखाई दे रही है इन ड्रेस के साथ माधुरी ने अपने बालो में बन बनाया हुआ है

माधुरी का मॉडर्न लुक हो या फिर ट्रेडिशनल लुक उनका हर स्टाइल उनके फेन्स को काफी पसंद आता है और उनकी हर फोटो सोशल मिडिया पर हंगामा करती है

माधुरी का ये ऑउटफिट डांसिंग रियलिटी शो डांस दीवाने का है एक्ट्रेस का ये पिंक कलर का अंदाज उनके फेन्स ने काफी पसंद किया है माधुरी के फेन्स ने उनकी इस फोटोज पर काफी लाइक्स और कमेंट किये है किसी एक ने तो उनको जलपरी का इमोजी कमेंट किया है

माधुरी के वर्कफ्रंट की बता करे तो ये रियलिटी शो डांस दीवाने 3 में जज के रूप में नजर आ रही है पिछली बार ये फिल्म कलंक में नजर आयी थी और अब उपकमिंग प्रोजेक्ट में ये जल्द ही नेटफ्लिक्स सीरज फाइंडिंग अनामिका ने दिखाई देगी

म्यूजिक वीडियो हवा करदा में दिखाई देंगी शमा सिकंदर

अभिनेत्री शमा सिकंदर म्यूजिक वीडियो हवा करदा में नजर आएंगी और यह ट्रैक 15 अप्रैल को दर्शकों तक पहुंचने के लिए तैयार है। इस गाने में शमा के साथ गौरव बजाज भी दिखाई देंगे। गाने को अफसाना खान और साहिल सिंडिकेट ने गाया है। इसमें गीत का संगीत है और इसे रास ने लिखा है। गाने का वीडियो धवानी गौतम और आलोक ठाकुर द्वारा निर्देशित किया गया है।

शमा ने कहा, यह एक मजेदार गाना है, एक पेप्पी और ट्रेंडी नंबर है। मुझे यकीन है कि चहुंओर युवा इसे काफी पसंद करेंगे। हमने इसे

सभी प्रोटोकॉल को निभाते हुए शूट किया है और हमने इसे बहुत जल्दी निपटाया है। टीवी सीरीज ये मेरी लाइफ है में पूजा की भूमिका के लिए जानी जाने वाली अभिनेत्री को इस गाने को लेकर दर्शकों की प्रतिक्रिया का इंतजार नहीं हो पा रहा है। उन्होंने कहा कि वह गाने के सामने आने का इंतजार कर रही हैं और दर्शकों की प्रतिक्रिया देखना चाहती हूं।

आज का राशिफल

मेषः शेयर मार्केट, म्युचुअल फंड से मनोनुकूल लाभ होगा। बेरोजगारी के प्रयास सफल रहेंगे। यात्रा लाभदायक रहेगी। भेंट व उपहार की प्राप्ति होगी। कोई बड़ी समस्या का हल सहज ही होगा।

वृषः विवाद को बढ़ावा न दें। फालतू खर्च होगा। अपेक्षाकृत कार्यों में विलंब होगा। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। किसी व्यक्ति के बहकावे में न आएं। परिवार के किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर खर्च होगा।

मिथुनः यात्रा लाभदायक रहेगी। रुका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। लाभ में वृद्धि होगी। कारोबार में वृद्धि होगी। शेयर मार्केट से लाभ होगा।

कर्कः किसी बड़े काम को करने की तीव्र इच्छा जागृत होगी। आर्थिक उन्नति की योजना बनेगी। व्यापार लाभदायक रहेगा। कार्यस्थल पर परिवर्तन हो सकता है।

सिंहः धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। तीर्थयात्रा की योजना बनेगी। कानूनी अड़चन दूर होकर लाभ की स्थिति बनेगी।

कन्याः विवाद को बढ़ावा न दें। चोट व दुर्घटना के प्रति सावधानी आवश्यक है। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें।

तुलाः कानूनी अड़चन दूर होकर लाभ की स्थिति बनेगी। शत्रु पस्त होंगे। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। व्यापार लाभदायक रहेगा। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे।

वृश्चिकः किसी व्यक्ति के बहकावे में न आएं। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। स्थायी संपत्ति के कार्य बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

धनुः कानूनी अड़चन सामने आएगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। बेचैनी रहेगी। व्यर्थ दौड़धूप रहेगी। रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। पार्टी व पिकनिक का आनंद प्राप्त होगा।

मकरः कोई बड़ी बाधा उठ खड़ी हो सकती है। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें, गुम हो सकती है। विवाद के बढ़ावा न दें। बुरी खबर मिल सकती है, धैर्य रखें।

कुंभः लाभ के अवसर हाथ आएंगे। मेहनत का फल मिलेगा। मान-सम्मान मिलेगा। मित्रों का सहयोग कर पाएंगे। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे।

मीनः भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी। उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। आत्मसम्मान बना रहेगा। बुद्धि का प्रयोग करेंग। कार्य में सफलता मिलेगी।

खाने में मजेदार है पोटैटो सालसा

बच्चों के बर्थ डे पार्टी को घर में ऑर्गनाइज़ कर रही हैं तो कुछ ऐसा बनाएं जिसे बच्चे चाव से खाएं और इसे बनाना भी आसान हो। जानते हैं ऐसी ही एक रेसिपी।

सामग्री :

500 ग्राम आलू, 1 कप दूध, 4 कप पानी, 2 टेबलस्पून मक्खन, 1/2 कप सार क्रीम, 3/4 कप सालसा (बारीक कटा प्याज, टमाटर, नींबू का रस, नमक, धनिया, हरी मिर्च को मिलाकर तैयार किया गया), 1/2 कप कद्दूकस किया चेडार चीज़, 2 टेबस्पून बारीक कटा धनिया

विधि :

तेज उबलते पानी में आलू को हल्का उबाल लें। इसे छानकर अलग रखें। एक कटोरी में दूध और मक्खन को एक साथ मिलाएं। इसे आलू पर फैलाएं। बेकिंग शीट पर आलू की स्लाइसेज़ काटकर रखें। 200 डिग्री सेल्सियस पर 35 मिनट तक इसे रोस्ट करें। एक बोल में सालसा, सार क्रीम और चीज़ को डालकर मिलाएं। अब आलू को निकालें। प्लेट में लेयरिंग से सजाएं। आलू पर सालसा मिक्सचर और धनिया पत्ती डालें और तुरंत सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य- 55

बाएं से दाएं
1. अभिमान, घमंड, अनुमान 4. बादल, मेघ, जलद (सं) 6. अधिकार वाला, अधिकारी 8. गति, सामंजस्य, समा जाना 10. कारावास, जेल 11. जोर, शक्ति, जान, सांस 12. राजाओं के रहने का भवन 15. मालामाल, अमीर, धनवान 18. नाव खेने का यंत्र 20. 'खन' ध्वनि उत्पन्न होना, पायल आदि का शब्द करना 21. मार डाला हुआ, घायल किया हुआ 22. हमेशा, आवाज 23. आग की लपट, ज्वाला 24. झगड़ा, तकरार 25. हीरा।

ऊपर से नीचे
1. दोषी, अपराधी 3. ताश में नौ अंक वाला पत्ता 4. झंडा, पताका 5. गहरा कीचड़, पंक 7. बूंद, अंश 9. मृत्यु के देवता 13. संसार, दुनिया, जग 14. हुजूर, जनाब, सम्मान सूचक एक शब्द (उ.) 16. सच्चा, धर्मनिष्ठ, ईमानवाला 17. अनूठा, बांका, अनुपम, छैला 18. आश्रय, शरण 19. साधुवाद, प्रशंसा 20. पटवारी की ऐसी बही जिसमें खेत संबंधी अनेक बातें लिखी जाती है, एक प्रकार का दानेदार संक्रामक रोग 23. गम, मातम, दुख।

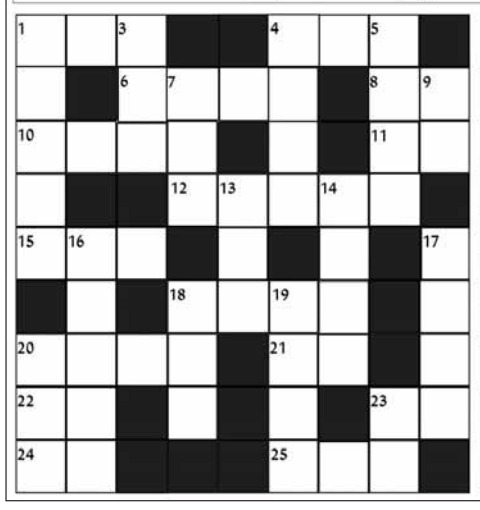

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 54 का हल

स्मृ	ति	■	पा	व	क	■	बे	ल
■	र	ज	नी	च	र	■	■	टूटू
मु	स्का	न	■	न	म	की	न	■
सा	र	■	स	■	■	ट	ख	ना
फि	■	अ	जा	य	ब	■	रा	जा
र	च	ना	■	था	ल	■	■	य
■	■	धि	■	र्थ	■	स	मा	ज
उ	प	कृ	त	■	आ	वा	ज	■
ल्लू	■	त	■	■	ब	ल	रा	म

सू-दोकू- 55

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक रख सकते है।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.54 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6